"अम्मू से अम्मा तक"

24th फरवरी 1948 को मैसूर स्टेट के मांड्या जिले के पांडवपुर तालुका के एक रुढ़िवादी लेकिन प्रतिष्ठित अयंगर (ब्राह्मण) परिवार मे जन्मी कन्या जिसे उसको उसकी दादी का नाम "कोमलवल्ली" दिया गया। लेकिन उसकी माँ और अन्य रिश्तेदार उसे "अम्मू" कहकर बुलाते थे।

कोमलवल्ली के दादाजी मैसूर महाराजा कृष्णा राजवाडियार IV के राज्य में सर्जन थे। उनके बेटे का विवाह एच.ए.एल. (हिंदुस्तान ऐयरोनाटिक्स लिमिटेड) में काम कर रहे रंगास्वामी अयंगर की बेटी वेदावल्ली से हुआ। जयराम पेशे से वकील थे और अम्मू की माँ वेदावल्ली जयराम की दूसरी पत्नी थी। पहली पत्नी जयम्मा से बेटा वासुदेवन है। अम्मू के इस सौतेले भाई से उसके रिश्ते कभी अच्छे नहीं रहे।

अयंगर परिवार में दो नाम रखने की परंपरा के चलते अम्मू का दूसरा नाम रखा गया "जयललिता"। अम्मू जब दो वर्ष की थीं तब पिता का देहांत हो गया। और वो 1950 में बैंगलोर आ गई। वेदावल्ली ने अपनी बेटी को पालने के लिए शार्ट हैंड और टाइपिंग सीखी। और 1952 में अपनी बहन अंबुजावल्ली के पास बैंगलोर से मद्रास (चैन्नै) आ गई। जहां उनकी बहन एक एयरहोस्टेस होने के साथ विद्यावती के नाम से फिल्मों में छोटे-मोटे रोल करती थीं। मद्रास में अम्मू की माँ वेदावल्ली ने पहले एक फर्म में काम करना शुरु किया और बाद में बहन के प्रभाव से स्क्रीन नाम "संध्या" लेकर काम करना शुरु कर दिया। अम्मू की माँ कुछ खास इंतजाम ना होने की वजह से अम्मू और उसके भाई को अपने माता-पिता और बहन के पास बैंगलोर छोड़ आई थीं। जहां छोटी अम्मू (जयललिता) 1950 से 1958 तक रही। इन वर्षों के दौरान जब-जब अम्मू की मां उनसे मिलने बैंगलोर आती और उनके चेन्नै वापसी का समय आता तो माँ के बिछड़ने के दर्द से डरी हुई 5-6 साल की अम्मू रात में सोते हुए माँ की साड़ी का पल्लू अपनी ऊंगली में कसकर बांधकर सोती। जिससे माँ

उन्हें छोड़कर ना जा सके। लेकिन जाना तो माँ की मजबूरी थी। ऐसे में माँ सावधानी से अपना पल्लू खोलकर उठजाती और अपनी जगह अपनी बहन यानी अम्मू की मासी का पल्लू अम्मू के अंगूठे में बांध देती और चली जाती थी। नन्हीं अम्मू जब सुबह उठती तो माँ को नहीं पाकर बेहद दुखी होती थी और फिर दो-तीन दिन तक बस रोती रहती। माँ ये दूरी के उन 6 सालों को याद करते हुए जयललिता नें एक इंटरव्यू में कहा कि उन 6 सालों के दौरान मैंने हरपल मेरी माँ को मिस किया।

अम्मू यानी जयललिता नें बैंगलोर के "बिशप कॉटन गर्ल्स कॉलेज" से स्कूलिंग पूरी की। जयललिता बचपन से ही बेहद शर्मीली और अंतर्मुखी स्वभाव की थीं। स्कूल की पढ़ाई के दौरान दूसरी लड़कियाँ जयललिता की माँ के फिल्मों में काम करने को लेकर उनका मज़ाक बनातीं। लेकिन जयललिता के गुणों और बेहद अच्छे नंबरों नें उन्हें नीचा दिखाने की लोगों की इस कोशिश को कभी कामयाब नहीं होनेदिया। और 16 वर्ष की उम्र में जब वो हाइस्कूल में स्टेट टॉप करके स्कूल से निकलीं तो सभी टीचर्स नें बल्कि पूरे स्कूल नें सर्वसहमति से उन्हें "बेस्ट आउटगोइंग स्टूडेंट का अवार्ड दिया। और उस पल को जयललिता नें ताउम्र अपनी जिंदगी का सबसे बेहतरीन लम्हा माना। जयललिता को आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की गई। जयललिता पढ़-लिखकर एक सफल वकील बनना चाहती थीं। लेकिन उनकी माँ चाहती थीं कि वो फिल्मों में काम करें।

अम्मू के लिए ये कशमकश का मुश्किल दौर रहा जहां एक ओर अम्मू की पढ़लिख कर एक सफल वकील बनने की. आसमान छूने की महात्वाकांक्षा थी वहीं दूसरी ओर घर की जिम्मेदारियों का बोझ अकेली दौती माँ की जिम्मेदारियों का बोझ बाँटने का दबाव।

जयललिता ने अपने एक इंटरव्यू में बताया कि तब उन्हें पहली बार पता चला कि उनके परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है और किस तरह उनकी माँ सारी मुश्किलों से

Bestfriend

जूझते हुए भी उनकी और उनके भाई की जिम्मेदारी अच्छी तरह निभा रही थीं। जयललिता की माँ नें उनके 16 वर्ष के होने तक उन्हें और उनके भाई को कभी कोई कमी नहीं महसुस होने दी। ऐसे में जब जयललिता को अपनी माँ की जिम्मेदारियाँ बाँटने का मौका मिला तो उन्होंने अपनी सफल वकील बनने की महत्वाकांक्षा का बलिदान कर फिल्मों में काम करना स्वीकार किया।

चरित्र अभिनेत्री के रुप में काम कर रही माँ की वजह से घर पर फिल्म प्रोड्युसर्स का आना जाना था। ऐसे में 16 वर्ष की खुबसुरत जयललिता के पास फिल्मों के ऑफर्स खुद चलके आए। हलाँकि संयोगवश एक बालकलाकार के रुप में जयललिता नें 1961 में "श्री शैल महात्मे" में देवी पार्वती का रोल करना पड़ा था, जब वो अपनी माँ के साथ उनके एक शूट पर साथ थी। जयललिता की माँ नें 1964 में तमिल फिल्म "कारनन" की थी, जिसके प्रोड्युसर्स और डायरेक्टर थे-बी. आर. पुथलू। जब फिल्म की एक पार्टी में जयललिता अपनी माँ के साथ पहुँची तो पुंथलू नें उन्हें अपनी कन्नड़ फिल्म "चिन्नदा गोम्बे" में लेना चाहा। पहले तो जयललिता और उनकी माँ नें इस ऑफर को अस्वीकार कर दिया था। बाद में बेहद अच्छी फीस और इस वादे के साथ कि फिल्म की शूटिंग 2 माह में पुरी कर ली जाएगी, जयललिता नें फिल्म साइन कर ली। पुंथलू नें अपना वादा निभाया फिल्म 2 माह में पुरी कर ली गई। ये फिल्म सुपरहिट रही। जिस वजह से 1964 तक जयललिता एक बेहद चर्चित और जाना पहचाना चेहरा बन चुकी थीं। घर की स्थिति देखते हुए, माँ की बात सुनकर 1965 में तमिल फिल्म "वेन्निरा अदा" की, जिसके डायरेक्टर सी. व्ही. श्रीधर थे। जयललिता एक बेहद बोल्ड अदाकारा रहीं। वो तमिल फिल्मों में स्कर्ट्स का चलन लाने वाली पहली अदाकारा थी। वो अपने समय की सर्वाधिक फीस लेने वाली अभिनेत्री थी (यहाँ तक की बॉलीवुड़ अभिनेताओं से ज़्यादा)।

जयललिता नें तमिल, तेलगु, कन्नड़, अंग्रेजी और हिंदी फिल्मों में काम किया। उन्होंने लगभग 200 फिल्मों में 99 तमिल फिल्मों में 85 सिल्वर जुबली रहीं।

जयललिता ये कहती थीं कि मुझे

न ही अभिनय पसंद था और न ही राजनीति। लेकिन फिर भी मेरी ये आदत है कि मैं जिस भी क्षेत्र में हूँ, मुझे शीर्ष पर रहने की आदत है, इसलिए मैंने अपना स्थान बनाया।

जयललिता का जीवन यूँ तो संघर्षों और उतार-चढ़ावों की कहानी है। लेकिन इस उतार-चढ़ाव और संघर्षपूर्ण जीवन को भी उन्होंने इस तरह जिया कि वे दुनिया के लिए एक मिसाल बन गईं।

जयललिता के मुताबिक वो अपनी जिंदगी में सबसे अधिक तब टूटी जब उनकी माँ का देहांत हो गया। उस समय जयललिता सिर्फ 20 वर्ष की थीं और वो उस समय दक्षिण की शीर्ष अभिनेत्री थीं। जयललिता की माँ जिन्होंने जयललिता को हमेशा बेहद सुरक्षित रखा, जो जयललिता की हर छोटी-बड़ी जरूरत हर बात का ख्याल रखती थीं, फिर वो चाहे जया की फिल्में, उनकी फीस, बैंक अकाउंट की बात हो या घर संभालने, घर के काम या नौकर-चाकरों की बात हो, वो जयललिता को छोड़कर हमेशा-हमेशा के लिए चली गईं। ऐसे में जयललिता एकदम अकेली पड़ गईं। उन्होंने अपने एक इंटरव्यू में कहा कि मैं बहोत मासूम (Innocent) थी, मुझमें दुनियादारी की बिलकुल समझ नहीं थी। यहाँ तक कि मुझे ये भी नहीं पता था कि घर पर कितने नौकर हैं, उनकी सैलरी कितनी है, बैंक अकाउंट कैसे चलाना है, चेक किस तरह भरना है। उनकी इस मासूमियत और भोलेपन का उनके चारों तरफ के सभी लोगों ने भरपूर फायदा उठाया। ऐसे में जया के जीवन में आए इस खाली स्थान को उनके मेंटर (जिनके साथ जयललिता फिल्मों में काम करती थीं) एम. जी. आर. (मरुदुर गोपालन रामचंद्रन) ने ~~भरा~~ जीवन में आए खाली स्थान को भरा। जयललिता ने अपने एक इंटरव्यू में बताया कि एम. जी. आर. मेरे माता-पिता, भाई-बहन, दोस्त, किलासफर, गाइड थे। वो कहती जब तक माँ थीं उन्होंने मेरी जिंदगी को अपने हिसाब से चलाया और उसके बाद जब तक एम. जी. आर रहे उन्होंने मेरी जिंदगी को उनके हिसाब से चलाया। (डिक्टेट किया)

जयललिता एम. जी. आर. से

इतनी प्रभावित थीं कि उनसे शादी भी करना चाहती थीं। पर इस बात के लिए एम. जी आर. (जो उनसे 31 वर्ष बड़े थे और शादीशुदा थे) नहीं माने। ऐसा कहते हैं तेलगू अभिनेता शोभन बाबू के साथ भी उनकी नजदीकियां रहीं लेकिन बात शादी तक नहीं पहुंची। जयललिता कहती थीं कि बिना शर्तों का प्यार सिर्फ फिल्मों में होता है, मुझे हमेशा शर्तों पर प्यार मिला। "मैं शादी भी करना चाहती थी पर अच्छा हुआ जो नहीं की। क्यों कि अपने आसपास की शादियों और परिवारों का जो हश्र देखती हूं, उससे मुझे लगता है मैंने सही किया।"

अपने एक इंटरव्यू में अपने पहले क्रश के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने क्रिकेटर नारी कांट्रेक्टर, नवाब पटौदी और शम्मी कपूर का नाम लिया।

फिल्मी दुनिया में बेहद सफल होने के बाद जब वो फिल्मी दुनिया से दूर हुईं उसके बाद एम जी आर के कहने पर, राजनीति में आईं। उन्हें अंग्रेजी और हिंदी भाषा पर पकड़ और करिश्माई व्यक्तित्व की वजह से पार्टी का प्रचार सचिव बनाया गया। अपने पहले ही जन-संबोधन' में उन्होंने 'नारी शक्ति' पर बेहतरीन संबोधन / भाषण देकर लोगों का दिल जीत लिया। अंग्रेजी व हिंदी भाषा पर पकड़ की वजह से ही उन्हें राज्यसभा भेजा गया। वहाँ भी उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई।

एम जी आर के द्वारा राजनीति से परिचित कराई गई जयललिता नें राजनीति में अपनी मेहनत और काबिलियत से अपना एक अलग मुकाम बनाया। हलाँकि 1987 में जब एम जी आर का निधन हुआ तब एक बार फिर राजनीति में अपने आपको स्थापित करती जयललिता के जीवन में एक बड़ा तूफान आया। हालात इतने बिगड़े कि एम जी आर के घरवालों नें जयललिता को घर में घुसने तक नहीं दिया। जयललिता की जीवनी लिखने वाली वासंती ने कहा है कि "जयललिता एम जी आर के घर पहुचकर दरवाजा पीटती रहीं। काफी देर बाद गेट खुला तो किसी ने ये नहीं बताया कि एम जी आर का शव कहाँ है। बाद में पता चला कि शव पिछले दरवाजे से राजाजी हॉल ले जाया गया है। जयललिता तुरंत वहां पहुंची और

भीड़ को धकेलती हुई किसीतरह एम जी आर के शव के सिरहाने तक पहुँची। वह दो दिनों तक शव के पास खड़ी रही, पहले कि 13 घंटे और दूसरे दिन 8 घंटे। एम जी आर की पत्नी के समर्थक उनके पैरों को कुचलते रहे। पर ना वो हिली और न ही उनकी आँखों से आँसू निकले। जब एम जी आर का पार्थिव शरीर शव वाहन पर ले जाया जा रहा था तो जयललिता भी पीछे-पीछे दौड़ी। इस बीच एक सैनिक ने हाथ बढ़ाकर ऊपर आने में उनकी मदद भी की लेकिन एम जी आर की पत्नी जानकी के भतीजे दीपक ने उन्हें धक्का देकर गिरा दिया। हताश जयललिता वापस लौट आईं।

ए आई ए डी एम के प्रमुख एम जी आर द्वारा कोई उत्तराधिकारी न घोषित किए जाने की वजह से पार्टी में उनकी विरासत की लड़ाई छिड़ी।

पार्टी के अधिकतर लोग उनकी पत्नी जानकी के पक्ष में थे। ऐसे में जयललिता ने नई पार्टी बनाली। अगले चुनाव में जीत डी. एम. के. को मिली, जयललिता की पार्टी 27 सीटों के साथ दूसरे स्थान पर रही। जानकी की पार्टी को सिर्फ एक सीट मिली और उस पार्टी के सभी लोग वापस जयललिता के साथ उनके नेतृत्व में आ गए।

सन 1991 में चुनाव के कुछ दिनों पूर्व राजीव गाँधी की हत्या से जयललिता को इंडियन नेशनल कांग्रेस के साथ अलायंस की वजह से सहानुभूति की लहर का बहोत फायदा मिला और उनकी पार्टी और भारतीय कांग्रेस अलायंस भारी बहुमत से विजयी हुए। और 24 जून 1991 - 12 मई 1996 तक तमिलनाडु की सबसे युवा मुख्यमंत्री के रूप में अपना पहला कार्यकाल सफलता पूर्वक पूरा किया। जयललिता के राजनैतिक जीवन में उतार-चढ़ाव चलते रहे, लेकिन यहाँ भी जयललिता ने अपना एक खास मुकाम, अपनी एक खास पहचान बनाई और जनता के लिए कई अभूतपूर्व कार्य किए। जैसे मुख्यमंत्री बनने के बाद कन्या भ्रूण हत्या के मामलों में सख्ती दिखाने से लिंगानुपात में काफी सुधार हुआ। स्कूलों

में बच्चों के लिए पिता के नाम के अनिवार्यता को खत्मकर कहा गया माँ का नाम ही काफी है। ट्रांसजेंडर्स के लिए स्कूली शिक्षा की व्यवस्था की गई। 1991 में जन कल्याण के सभी कामों और इनकी जनहित की योजनाओं के चलते लोगों ने 'अम्मू' यानी जयललिता को "अम्मा" नाम दिया। एक ऐसी ममतामयी महिला की छवि जो लाखों-करोड़ों लोगों की माँ समान रही। लोगों ने उन्हें प्यार से 'अम्मा' नाम दिया। उन्होंने 'अम्मा कैंटीन' चलाई, जहाँ 1 रु. में 2 इडली, सांभर, 3 रु. में 2 रोटी दाल, 5 रुपए में लेमन राइस या कर्ड राइस सांभर के साथ मिलता है। राज्य में राशनकार्ड धारकों को 20 किलो चावल फ्री किया। अम्मा पानी, अम्मा नमक और गरीब महिलाओं के लिए मुक्त सैनिटरी नैपकीन बनाई।

जयललिता के जीवन का एक और बेहद महत्वपूर्ण शख्स जिनके बिना जयललिता की ये कहानी अधूरी है - वो है चिन्नम्मा यानी शशिकला। जिनके बारे में जयललिता कहती थीं "उडन पिराप्पु" यानी "सगीधारी"। यानी हम बहने हैं सिर्फ खून का रिश्ता नहीं है। एक मामूली वीडिओ पार्लर चलानेवाली शशिकला ने जयललिता के करीब आने के लिए बहोत पापड़ बेले। और फिर ये दोस्ती एक सगे रिश्ते से बढ़कर हो गई और 1989 में तो शशिकला जयललिता के घर में ही शिफ्ट हो गई। कहते हैं कि जयललिता के घर के नौकर, ड्राइवर, कुक लगाने जैसे छोटे फैसले से लेकर पार्टी और राज्य के बड़े-बड़े फैसले भी चिन्नमा लेती थीं। दोनों में सगी बहनों की तरह प्यार रहा। लगभग दो दशक तक शशिकला जयललिता की परछाई बनकर रही। लेकिन 2011 में शशिकला पर कुछ गंभीर आरोप लगे कि उन्होंने अपने पति नटराजन को मुख्यमंत्री बनाने के लिए जयललिता को खाने में धीमा जहर (आर्सेनिक) मिलाकर मारने की कोशिश की। इसके बाद बहन समान शशिकला को जयललिता ने न सिर्फ घर बल्कि पार्टी से भी निकाल दिया। लेकिन इसके बाद भी वो उन्हें मन से नहीं निकाल पाईं। यही कारण था कि 100 दिन चले इस अलगाव के बाद शशिकला के माँफी माँग लेने पर जयललिता ने उन्हें वापस अपना लिया।

जनता की इय पुरात्ची थलवी' यानी 'क्रांति की नायिका' को जीवन की हर राह में बहुत से संघर्ष मिले। फिर चाहे वो व्यक्तिगत जीवन हो, फिल्मे या राजनीति। लेकिन अपनी दृढ़-इच्छा शक्ति और मजबूत इरादों की वजह से अपनी माँ की छोटी सी "अम्मू" ने सफलता के कई बड़े कीर्तिमान बनाए और करोड़ों लोगों के दिलों में दुर्गा, गंगा या ममतामयी माँ की तरह "अम्मा" बनकर राज किया। फिर चाहे वो व्यक्ति किसी भी धर्म या संप्रदाय का हो। करोड़ों लोगों के जीवन को "अम्मा" ने छुआ।

6 दिसंबर 2016 को करोड़ों दिलों पर राज करने वाली "अम्मा" 75 दिन तक हास्पिटल में जीवन मृत्यु की बीच संघर्ष के बाद अपनी आखिरी साँस ली। लेकिन अपनी माँ की छोटी सी "अम्मू" से लेकर करोड़ों दिलों पर राज करने वाली "अम्मा" बनने तक का जयललिता का यह सफर सभी महिलाओं और संपूर्ण समाज के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहेगा।

भावना